ना कर इतना सितम मोहन | By Sharda Pushp

ना कर इतना सितम मोहन
हम इस जग के सताए हैं
हारे हैं खुद से ही बाबा
तभी तेरे दर पे आये हैं

तेरी रेहमत के किस्से सुन
जगा विश्वास ये मन में
बदल देगा तू किस्मत को
यही उम्मीद लाये हैं

क्यों पत्थर बन के बैठे हो
ज़रा नज़रें मिलाओ तो
ना जाने कितने अश्क़ों को
इन आँखों ने बहाएं हैं

सहने की ना बची हिम्मत
वरना आगे भी सेह लेते
बेगाना क्यों समझ बैठे
नहीं तेरे पराये हैं

कहे रूबी रिधम तुमसे
तोड़ो ना आस मनमोहन
पसारे हाथ बैठे हैं
चरणों में सर झुकाये हैं

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a8%e0%a4%be-%e0%a4%95%e0%a4%b0-%e0%a4%87%e0%a4%a4%e0%a4%a8%e0%a4%be-%e0%a4%b8%e0%a4%bf%e0%a4%a4%e0%a4%ae-%e0%a4%ae%e0%a5%8b%e0%a4%b9%e0%a4%a8-by-sharda-pushp/